Volume-4, Issue-8, August-2015 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper Journalism

# डिजिटल मीडिया और ग्रामीण विकास

**Dr. Subodh Kumar** सह-आचार्य एवं संयोजक, पत्रकारिता विभाग, वर्धमान महावीर खुला विवि, कोटा

**ABSTRACT**

नवाचारों से घिरी संचार व्यवस्था दिन प्रति दिन अपनी रफ़्तार तेज करती जा रही है| वर्तमान में डिजिटल मीडिया की पहुंच के साथ ही साथ उसकी उपयोगिता बढ़ती जा रही है| हर एक क्षेत्र डिजिटल मीडिया से संचालित हो रहा है| ग्रामीण अंचलों में इन्टरनेट की लोकप्रियता पिछले चार-पांच वर्षों में तेजी से बढ़ी है| साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों को तकनीक से जोड़ने के लिए डिजिटल इंडिया जैसी योजनाएं भी लागू की जा रही हैं| ऐसे में डिजिटल मीडिया के जरिए ग्रामीण अंचलों के सामाजिक और आर्थिक विकास का विषय एक एजेंडा बनता जा रहा है| प्रस्तुत शोध पत्र में इस बात पर मंथन किया गया है कि किस तरह से डिजिटल मीडिया ग्रामीण अंचलों में सामाजिक परिदृश्य और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर सकती है|

**KEYWORDS :** डिजिटल मीडिया, ग्रामीण अंचल, सामाजिक और आर्थिक विकास|

**भूमिका**

बदलते दौर में डिजिटल मीडिया की पहुंच गांव–गांव तक कूच कर रही है| सूचना संचार तकनीक ने नए-नए उपकरण इजाद कर दिए हैं, जिसने आम व्यक्तियों के हाथ में डिजिटल मीडिया की पहुंच बना दी है| वर्तमान में रोजमर्रा की जिन्दगी में तकनीक ने कुछ ऐसा ताल-मेल बिठाया है कि बिना इसके दिन की शुरुआत नहीं होती और न ही रात को नींद आती है| तकनीक ने हमें हर सुविधा एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध करवादी है और वह स्थान है इन्टरनेट का वर्चुअल स्पेस| समय ने कुछ ऐसी करवट ली है कि आज दुनिया के किसी भी छोरों की दूरी एक क्लिक तक सीमित नजर आने लगी है| सूचना संचार प्रौद्योगिकी ने ग्लोबल विलेज की संरचना को आधार प्रदान कर दिया है, ऐसे में पूरा विश्व वर्चुअल मीडिया के जरिए अपनी बात को संचारित कर खुले तौर पर अपनी अभिव्यक्ति को प्रेषित कर पा रहा है| न्यू मीडिया के विस्तार से ई-कॉमर्स, ई-गवर्नेंस एवं ई-कम्युनिकेशन के दायरे में काफी तेजी से इजाफा हो रहा है| डिजिटल इंडिया पालिसी का मिशन गांवों को सीधे तौर पर तकनीक से जोड़ कर विश्व पटल पर स्थापित करना है| इस तरह की शुरुआत तो काफी सराहनीय है किंतु ग्रामीण अंचलों के सामाजिक और आर्थिक विकास में डिजिटल मीडिया किस तरह की भूमिका का निर्वहन करेगी यह प्रश्न चर्चा का विषय है| विश्व के जाने-माने जनसंचारशास्त्री फिलिप मेयर कहते हैं कि विश्व का आखिरी समाचार पत्र सन् 2043 में छपेगा और इसके बाद समाचार पत्रों के ऑफ़लाइन संस्करण बंद हो जाएंगे, उनका यह मत इस बात को दृष्टिगोचर करता है कि आने वाला समय सिर्फ और सिर्फ तकनीक पर आधारित होगा| वर्तमान में विकास की परिभाषा तकनीकी विकास के इर्द-गिर्द घूमती है जो व्यक्ति या देश तकनीकी रूप से सक्षम है वह विकसित की श्रेणी में आता है और जो तकनीकी रूप से कमजोर है वह विकासशील देशों की लम्बी कतार में खड़ा है| भारत जैसे देश जहां की 65 से 70 फीसदी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हो वहां विकास की गति को तेज करने के लिए गांवों को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना जरूरी है| भारत में डिजिटल मीडिया का प्रयोग 2015 में लगभग 36 करोड़* लोग कर रहे हैं इसमें ग्रामीण क्षेत्रों से प्रयोग करने वालों की संख्या चालीस फीसदी की आस-पास है|इस संख्या में हर छण इजाफा जारी है| ग्रामीण क्षेत्रों से संचार व्यवस्था में तकनीक के प्रयोग के रुझान सकारात्मक सोच को जन्म देते हैं| बदलाव का सिलसिला तेज गति से चल रहा है क्योंकि यदि दिसंबर 2014 की बात करें तो यह आंकड़ा लगभग 30 फ़ीसदी (भारत में कुल इन्टरनेट यूजर्स में) के आस पास था अतः छह माह में 10 फ़ीसदी की बढ़ोत्तरी एक बड़े परिवर्तन की गवाह है|

**डिजिटल मीडिया**

डिजिटल मीडिया वह मीडिया है जसमें कंप्यूटर और इन्टरनेट के प्रयोग से संचार व्यवस्था स्थापित की जाती है| यह तकनीक कम्प्यूटर्स के समूहों को नेटवर्क के माध्यम एक-दूसरे से जोड़ कर संचार व्यवस्था कायम करती है| इस माध्यम में तुरत प्रतिपुष्टि (Instant Feedback)की क्षमता इसकी लोकप्रियता का मुख्य मापदंड है| कन्वर्जेन्स के दौर में सभी माध्यम डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हो गए है| समाचार पत्र हों या टीवी-रेडियो सभी इन्टरनेट पर मौजूद हैं| वर्तमान में सबसे लोकप्रिय माध्यम की श्रेणी में डिजिटल मीडिया को स्थान प्राप्त है| विश्व की सभी जानकारियां इस माध्यम पर 24 घंटे आप की फरमाइश पर उपलब्ध हो जाती हैं| इसकी तेज रफ़्तार दुनिया में किसी भी विषय पर तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त हो जाती है| इस सेगमेंट का अहम भाग सोशल मीडिया पूरी दुनिया की अभिव्यक्ति बन गई है| आज आंदोलनों का सिलसिला मंच से कम और सोशल मीडिया के जरिए ज्यादा कारगर हो रहा है उदाहरण के तौर पर अन्ना की आवाज हो या जैसमीन रेवोलुशन (अरब क्रांति) की धधक इसकी कारगरता का सबूत पेश करते हैं| आज लोग घर बैठे शॉपिंग, बैंकिंग, टिकिटिंग, एडमिशन फॉर्म, फीस डिपोसिट, परीक्षा और अन्य बहुत से कार्य कर पा रहे हैं| डिजिटल मीडिया ने लोगों की जीवन शैली को बदल दिया है| तकनीक आज हर जगह उपकरण बन गई है, मोबाइल तो जिन्दगी की चाभी की तरह हो गया है|वर्तमान में यदि किसी व्यक्ति का मोबाइल उससे कहीं छूट जाए तो उसके बहुत से काम बाधित हो जाते हैं| सपनों की यह दुनिया डिजिटल मीडिया के नाम से जानी जाती है जहां वर्चुअल स्पेस में आप पूरे विश्व से जुड़ जाते हैं और विश्व के किसी भी कोने में बैठा व्यक्ति कुछ ही छणों में आपसे लाइव रूबरू हो जाता है और आप उससे विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान कर पाते हैं|

**डिजिटल मीडिया और ग्रामीण अंचल**

डिजिटल मीडिया की पहुंच का दायरा दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है| रोज नई तकनीक के विकास से नए और किफायती उपकरण बाजार में आर रहे हैं जिससे डिजिटल मीडिया की पहुंच किसान के हाथ में आ गई है| आंकड़े बयां करते हैं कि भारत में कुल इन्टरनेट प्रयोग करने वालों में लगभग 40 फीसदी लोग ग्रामीण क्षेत्रों से तालुक रखते हैं| जहां तक बात भारत में ग्रामीण अंचलों में इन्टरनेट नेटवर्क की उपलब्धता की है तो लगभग सभी क्षेत्रों में मोबाइल टावरों के जरिए इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध हो गई है| इन्टरनेट के जरिए एजेंडा तो खूब सेट किया जा रहा है पर आज इस माध्यम के जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की पहल को आधार देना एक बड़ी जिम्मेदारी के तौर पर नजर आ रहा है| बदलाव की गाथा बस शहरों तक ही सीमित न रहे गांव भी इसकी मुख्य धारा से जुड़े| ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीक के प्रति बढ़ता रुझान यह बात सिद्ध करता है कि किसान खुद को विश्व पटल पर स्थापित करने के प्रयास कर रहा है| गांवों में मोबाइल क्रांति कुछ इस तरह बढ़ रही है कि अक्सर आपने मजाक में सुना होगा कि किसान भले सब्जी न खाए पर गेहूँ बेचकर मोबाइल रिचार्ज करवाता है|

विकास की आंधी कुछ इस तरह कि है कि हर काम डिजिटल मीडिया पर निर्भर होता जा रहा है| ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल मीडिया के प्रयोग से विकास की गति को प्रवाह देना मुख्य चुनौती है| पूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधीजीका कहना था कि यदि हमें देश का समावेशी विकास करना है तो हमें गांवों की ओर कूच करना होगा| सत्ता हो या तकनीक बिना विकेंद्रीकरण के हम भारत को विकसित नहीं कर सकते हैं| वर्तमान प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीजी का भी यही मत है और उनके द्वारा लाई गई डिजिटल इंडिया जैसी योजना जो ग्रामीण क्षेत्रों को तकनीक के जरिए विश्व से सीधे तौर पर जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है|

**डिजिटल मीडिया और ग्रामीण अंचलों का सामाजिक विकास**

सामाजिक परिवेश के संरक्षण और विकास के लिए सूचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, जागरूकता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, कृषि एवं स्वस्थ मनोरंजन एक जरूरी उपकरण हैं|कोई भी माध्यम तब जनमाध्यम कहलाता है जब उसमे सूचना, शिक्षा, जागरूकता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान एवं स्वस्थ मनोरंजन करने की सामर्थ हो| डिजिटल मीडिया में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो एक जनमाध्यम में होने चाहिए| इसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक विकास के ढांचे को मजबूती प्रदान करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा| डिजिटल मीडिया से गांवों को जोड़ देना जितनी बड़ी जिम्मेदारी है उससे ज्यादा जरुरी बात इसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक आधार को मजबूत करने की भी है| डिजिटल मीडिया की ग्रामीण अंचलों में पहुंच तो आंकड़े बयां कर ही रहे हैं किंतु अभी तक कोई ऐसा उदाहरण समाने नहीं आया जिससे कि यह प्रतीत होता हो कि सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करने में इसकी भूमिका रही हो| हालांकि राजनीतिक और वोटबैंक संबंधी मुद्दे तो इसके माध्यम से खूब उछाले जा रहे हैं किंतु सरकारी महकमे की ओर से कोई ऐसी जानकारी अभी तक इस माध्यम से नहीं प्रेषित की जा रही है जो ग्रामीण क्षेत्रों को सुदृण बनाने की दिशा में एक कदम मात्र ही हो| आज प्रत्येक जानकारी डिजिटल मीडिया पर उपलब्ध है पर ग्रामीण क्षेत्रों की एक समस्या भाषा को लेकर के है साथ ही हिंदी और अन्य स्थानीय भाषाओं में अभी भी जानकारियों की उपलब्धता का अभाव है| जैसे-जैसे तकनीक अपनी पहुंच बढ़ाती जा रही है वैसे ही हमें उस पर स्थानीय भाषाओं में सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध होना पड़ेगा तभी हम डिजिटल मीडिया के जरिए ग्रामीण अंचलों का सामाजिक विकास को सुनिश्चित कर पाएंगे|

**डिजिटल मीडिया और ग्रामीण अंचलों का आर्थिक विकास!**

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि जो कि जीवकोपार्जन का एक साधन थी, वर्तमान परिदृश्य में व्यवसाय का रूप धारण करती जा रही है| कृषि के साथ ही साथ ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योग भी धीरे-धीरे पांव पसार रहे हैं| कृषि हो या कोई अन्य कार्य आज सभी में नई-नई तकनीकों के प्रयोग का चलन बढ़ रहा है|सस्ते और टिकाऊ उपकरण विकसित हो रहे हैं| वर्तमान में जरूरत है कि जो बदलाव विश्व पटल पर हो रहें हैं उनकी जानकारी ग्रामीण क्षेत्रों में अविलम्ब पहुंच सके| डिजिटल मीडिया के प्रयोग के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ इस तरह का प्रशिक्षण दिया जाए कि प्रत्येक व्यक्ति तकनीक का सहजता से प्रयोग कर सके| अक्सर बात होती है कि किसान को उसकी फसल के सही दाम नहीं मिल सके क्योंकि उसके पास शहरों की बाजार तक पहुंचने के संसाधन नहीं थे यदि किसान को डिजिटल मीडिया के प्रयोग से फ्रेंडली कर दिया जाए और वो अपनी फसल घर बैठे ओएलएक्स एवं क्विकर जैसी वेबसाइट्स पर बेच सके तो यह एक सफल प्रयोग होगा|

**समाज निहितार्थ**

ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के पहिए को तेज करने के लिए सूचना संचार तकनीक के प्रयोग की जरूरत तेजी से बढ़ती जा रही है| ग्रामीण क्षेत्रों को शहरों से जोड़ने के लिए पक्की सड़कें जितनी जरूरी हैं उतनी ही जरूरत तकनीक के विकास की है| एक तरफ जहां मोबाइल फोन ने अपना दायरा बढ़ाया है और आज लगभग सभी गांवों में मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध हो गए हैं| सामाजिक सुदृणता को संजोने और वैश्विक परिदृश्य में सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए नवाचारों की पहुंच को ग्रामीण क्षेत्रों में सुनिश्चित करना होगा| तेजी से बदलता बाजार जो वर्चुअल मीडिया पर शिफ्ट हो रहा है इस माध्यम पर किसानों की दखल अभी न के बराबर है| इस बाजार में ग्रामीण अंचलों की दखलनदाजी को बढ़ाने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण व्यवस्था कायम करने की जरूरत महसूस हो रही है| ग्रामीण अंचलों से इन्टरनेट पर एक्सेस तो बढ़ी है पर ज्यादातर लोग सिर्फ सोशल मीडिया के प्रयोग तक सीमित हैं| ई-कृषि जैसे मुद्दे अभी ठंडे बस्ते में नजर आते हैं| किसान को डिजिटल मीडिया की मुख्य धारा में लाकर देश के समावेशी विकास के लक्ष्य को भेदना की ओर अग्रसित होने के लिए डिजिटल इंडिया जैसी नीतियों के समन्वयन को गंभीरता से लेना होगा,तभी डिजिटल मीडिया के द्वारा ग्रामीण अंचलों को सामाजिक और आर्थिक रूप से संपन्न बनाया जा सकता है|

## REFERENCES

पुस्तकें | 1. जोशी, शालनी, जोशी, शिवप्रशाद (2012). वेब पत्रकारिता नया मीडिया नये रूझान. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड| | 2. चतुर्वेदी, जगदीश्वर (2013). मीडिया समग्र (भाग-3) ज्ञान-क्रान्ति और साइबर संस्कृति. दिल्ली: स्वराज प्रकाशन | 3. सिंह, सुरजीत (2012). मीडिया अचीवर्स. जयपुर: हार्सबैक पब्लिकेशन| | 4. कुमार, राकेश (2009). इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं साइबर संचार पत्रकारिता. नई दिल्ली: श्री नटराज प्रकाशन| | 5. Saxena, Ambrish (2012). Issue of communication development and society. Gera, Gagan (Eds.) Social Media Networking and concept of International Citizenship (P.P.163-167). New Delhi :Kanishka Publisher, Distributors. | 6. Mathur, K, Prasant (2012). Social Media and Networking Concept, trend and dimensions. New Delhi :Kanishka Publisher, Distributors. | शोध पत्र | 1. Gupta, Komal.(Oct-Dec., 2013). ICT Vision 2020: A Milestone. Communication Today, 44-53 | 2. Dr. Nayak, S. Chandra.(Oct-Dec., 2013). Social Media: Connecting One and All. Communication Today, 66-74 | वेबसाइट्स | 1. https://www.google.co.in/search?q=internet+users+in+india+2015&biw=1366&bih=657&tbm=isch&tbo=u&source=univ&sa=X&ved=0CCQQsARqFQoTCPr4joaPnscCFUwjjgodEGcIwQ#imgrc=76GbbzwHCjpD8M%3A.* (5/8/2015 . 03:19 PM) | 2. https://en.wikipedia.org/wiki/Digital_media. (3/8/2015 . 10:30 AM) | 3. https://en.wikipedia.org/wiki/Digital_India. (3/8/2015 . 10:35 AM) |